छायाचित्र प्रदर्शनी

'पद्मश्री डॉ, विष्णु श्रीधर वाकणकर की विरासत'

(21–30 सितम्बर, 2019)

इंदिरा गाँधी राष्टोय कला केन्द्र, नई दिल्ली

आदि दृश्य विभाग

प्राचीन भारतीय संस्कृति, कला, स्थापत्य, पुरातत्त्व एवं प्राच्य विद्या के मर्मज्ञ तथा प्रागैतिहासिक कालीन मानव के चित्रांकन और आत्माभिव्यंजना को व्याख्यायित कर सजीवता प्रदान करने वाले बहुमुखी प्रतिभा के धनो पद्मश्री डॉ0 विष्णु श्रीधर वाकणकर जी के शताब्दी वर्षोत्सव में वाकणकर जी के कार्यो को जान–मानस क मध्य प्रचारित व प्रसारित करने हेतु इंदिरा गाँधी राष्टोय कला केन्द्र, नई दिल्ली निरंतर प्रयासरत है। इसी कड़ी में आदि दृश्य विभाग, इंदिरा गाँधी राष्टोय कला केन्द्र एवं कला व शिल्प महाविद्यालय, लखनऊ विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्त्वाधान म '***पद्मश्री डॉ0 विष्णु श्रीधर वाकणकर की विरासत***' विषय पर एक छायाचित्र प्रदर्शनी का आयोजन ललित कला संकाय, लखनऊ विश्विद्यालय में दिनांक 21–30 सितम्बर, 2019 तक किया गया। प्रदर्शनी के माध्यम से डॉ0 वाकणकर जी के जीवन के विविध पहलुओं यथा पारिवारिक जीवन, राजनैतिक, स्वतंत्रता सेनानी, राष्टोय स्वयं सेवक, इतिहासकार, चित्रकार, पुरातत्वेत्ता, मुद्राशास्त्री, भारतीय शैलचित्र के पितामाह तथा सरस्वती शोध अभियान से संबंधित दृश्यों को प्रदर्शित किया गया। प्रदर्शनी का उदघाटन परमश्रद्धेय पद्मश्री बाबा योगेंद्र जी के कर कमलो द्वारा हुआ। इस सुअवसर पर डॉ0 सुरेंद्र प्रताप सिंह (कुलपति, लखनऊ विश्वविद्यालय), डॉ0 सच्चिदानन्द जोशी (सदस्य सचिव, इंदिरा गाँधी राष्टोय कला केन्द्र) एवं श्री उत्तम पचारने (अध्यक्ष, ललित कला अकादमी, नई दिल्ली) की गरिमामयी उपस्थिति रही।

प्रदर्शनी अवलोकन के पश्चात् हल्दर भवन में सभा का आयोजन हुआ, जिसमे विभिन्न शैक्षणिक एवं कला संस्थाओं के छात्रो, विद्ववतजनों तथा कलाकारों की उपस्थिति रही। सभा का शुभारम्भ आमंत्रित अतिथियों द्वारा सरस्वती प्रतिमा पर माल्यार्पण से हुई। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि डॉ0 सच्चिदानन्द जोशी जी ने डॉ0 वाकणकर का प्राच्य भारतीय संस्कृति के प्रति समर्पण तथा प्रागैतिहासिक चित्रकला के माध्यम से तत्कालीन समाज व संस्कृति का व्याख्यात्मक स्वरुप को रेखांकित करने के श्रेष्ठतम कार्य को सभा के सक्षम प्रस्तुत किया। साथ ही, लगभग 1500 वर्ष पूर्व गुप्तकालीन अभिलेख (कुमारगुप्त बन्धुवर्मन का मंदसौर अभिलेख) के माध्यम से रेशम के कपड़ों के व्यापार संबंधी आधिकारिक विज्ञापन के विषय में भी सभा को अवगत कराया तथा उपस्थित छात्रों को इतिहास के समालोचनात्मक अध्ययन के लिए प्रेरित किया।

बाबा योगेंद्र जी ने वाकणकर जी से संबंधित अनेक स्मरणातीत अंशो को उद्धरित किया, जिसमे विश्वदाय पुरास्थल भीमबेठका की खोज एवं वास्कोडिगामा द्वारा भारत की खोज संबंधित प्रसंगो को प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि वाकणकर जी को लन्दन संग्रहालय से वास्कोडिगामा की दैनन्दिनी प्राप्त हुई जिसमे स्वयं वास्कोडिगामा ने उल्लेख किया था कि ''दक्षिण अफ्रीका के बंदरगाह पर उसे केरल निवासी चन्दन नामक भारतीय व्यापारी का जहाज मिला जिसकी सहायता से वह भारत के कोचीन बंदरगाह पर पंहुचा था'', और इस प्रकार वाकणकर जी ने वास्कोडिगामा द्वारा भारत की खोज संबंधी पाश्चात्य अवधारणा का खंडन किया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ0 सुरेंद्र प्रताप सिंह जी ने डॉ0 वाकणकर के संस्मरणों को याद करते हुए लखनऊ विश्वविद्यालय द्वारा उनसे संबंधित आयोजित किए गए कला प्रदर्शनी एवं कार्यशाला के विषय में चर्चा की। अंततः सभा का समापन डॉ0 संजीव कुमार गौतम के धन्यवाद ज्ञापन से हुआ।

आभार :

प्रस्तुत छायाचित्र प्रदर्शनी के मुख्य संयोजक डॉ0 बंसो लाल मल्ला जी (परियोजना निदेशक, आदि दृश्य विभाग) के मार्गदर्शन तथा परियोजना सहायक, श्री प्रवीण कुमार सी0 के0, श्रीमती रीता रावत, सुश्री सुपर्णा डे, श्री प्रमोद कुमार एवं सुश्री श्वेता सिंह आदि के सम्मिलित सराहनीय प्रयास के परिणामस्वरूप उक्त प्रदर्शनी का सफलतापूर्वक आयोजन संभव हो सका।

डॉ0 दिलीप कुमार सन्त
अनुसंधान अधिकारी (आदि दृश्य विभाग)